ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)71-72

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

शरद कुमार वर्मा
शिक्षक
रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल,
चारबाग, लखनऊ

Corresponding Author :
शरद कुमार वर्मा
शिक्षक
रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल,
चारबाग, लखनऊ

एकांकी

बालक वीरा की देशभक्ति

पात्र - 1. सूत्रधार

2. वीरा (नन्हा भगत सिंह)

3. भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह संधू

4. बालक कुलतार (भगत सिंह के भाई)

सूत्रधार (नेपथ्य से स्वर) - यह भारत की आजादी के पहले की कहानी है। यह घटना देश के महान देश भक्त भगत सिंह के बचपन की है। बचपन में बालक भगत सिंह को परिवार के लोग उन्हें वीरा कहकर बुलाते थे।

हम गाथा सुनाते हैं उन शहीदों की
जो देश की खातिर हुए बलिदान
उनकी त्याग और तपस्या को
सदा याद रखेगा हिन्दुस्तान

प्रथम दृश्य

(भगत सिंह का घर)

सरदार किशन सिंह - (भगत सिंह को पुकारते हैं) वीरा वीरा.... कहां है बेटा (स्वयं से) आज तो वीरा के स्कूल की छुट्टी है। फिर इतनी सुबह- सुबह न जाने कहां चला गया?

सरदार किशन सिंह (फिर से आवाज देते हैं) वीरा... वीरा (बालक कुलतार का प्रवेश)

सरदार किशन सिंह - पुत्तर कुलतार, क्या तुमने वीरा को देखा है?

बालक कुलतार - हां पिता जी, मैंने वीरा को खेतों की ओर जाते हुए देखा है

सरदार किशन सिंह - इतनी सुबह खेतों में क्यों गया है?

बालक कुलतार - हां , हां ..मुझे याद है भइया कह रहे थे कि मैं खेत में बीज बोने जा रहा हूं।

सरदार किशन सिंह - (हंसते हैं) तो मेरा नन्हा सा वीरा खेती किसानी करने खेतों में गया है। मैं भी जाकर देखता हूं कि वह खेतों में कौन से बीज बोने गया है।

दूसरा दृश्य

(खेत का दृश्य है बालक वीरा हाथों में कुदाल लेकर खेतों में कुछ कर रहा है)

सरदार किशन सिंह - (आवाज लगाते हैं) वीरा ओ वीरा

बालक वीरा - हां पिता जी

सरदार किशन सिंह - वीरा, क्या कर रहे हो?

बालक वीरा- भारत माता की जय... भारत माता की जय। पिता जी, अब हमें देश को गुलाम बनाने वाले अंग्रेजों से टक्कर लेना है और अपनी मार्तभूमि की रक्षा करनी है। यदि फिरंगियों के पास ढेर सारी बंदूकें हैं तो अब हमारे पास भी बहुत सारी बंदूकें होंगी। हम अंगेजों को हिंदुस्तान से भगा कर ही दम लेंगे।

सरदार किशन सिंह - बेटा वीरा, हम सब यही चाहते हैं कि हमारा हिन्दुस्तान जल्द से जल्द आजाद हो। लेकिन आज तुम खेतों में क्या कर रहे हों?

बालक वीरा - (पिता की अंगुली पकड़कर) मेरे साथ चलिए पिता जी, मैं आपको दिखाता हूं कि मैं इन खेतों में क्या कर रहा था।

सरदार किशन सिंह - हां हां चलो

बालक वीरा दिखाता है उसने जमीन में एक बंदूक गाड़ी हुई है)

बालक वीरा- ये देखिए पिता जी

सरदार किशन सिंह (आश्चर्य से) यह क्या है वीरा पुत्तर

बालक वीरा (सीना तानकर) पिता जी, मैंने जमीन में बंदूक बो दी है। कल को ढेर सारी बंदूकें हमारे खेतों में उगेंगी और उन हथियारों से हम अंग्रजों के मुकाबला कर अपने देश को आजाद करा देंगे।

सरदार किशन (भावुक होकर होकर गले लगा लेते हैं) बालक वीरा, तुम हिंदुस्तान के सच्चे सपूत हो। वीरा, जिस देश में तुम जैसे देशभक्त बालक हैं वह देश अधिक दिनों तक गुलाम नहीं रह सकता। आज हिन्दुस्तान के बच्चे- बच्चे में देश को आजाद कराने का जज्बा है। अब वह दिन दूर नहीं, जब हम सबका देश को अंग्रजों के चुंगल से मुक्त कराने का सपना पूरा होगा।

सूत्रधार (नेपथ्य से स्वर)- 15 अगस्त 1947 के दिन हमारा देश आजाद हुआ और शहीद भगत सिंह का सपना सच हुआ। जय हिंद जय भारत।

•